International Recognized Double-Blind Peer Reviewed Multidisciplinary Research Journal
Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850 Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume - 5 | Issue - 4 | May - 2015 Available online at www.isrj.org

सुगम गायन की परंपरा में कबीर

गजेन्द्र कुमार पाण्डेय
शोधार्थी, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, .गां.अ.हि.वि.वि,वर्धा

Short Profile :
Gajendra Kumar Pandey is working at Hindi and Comparative Literature Department in Mahatma Gandhi International Hindi University. He has completed M.Phil., Ph.D.

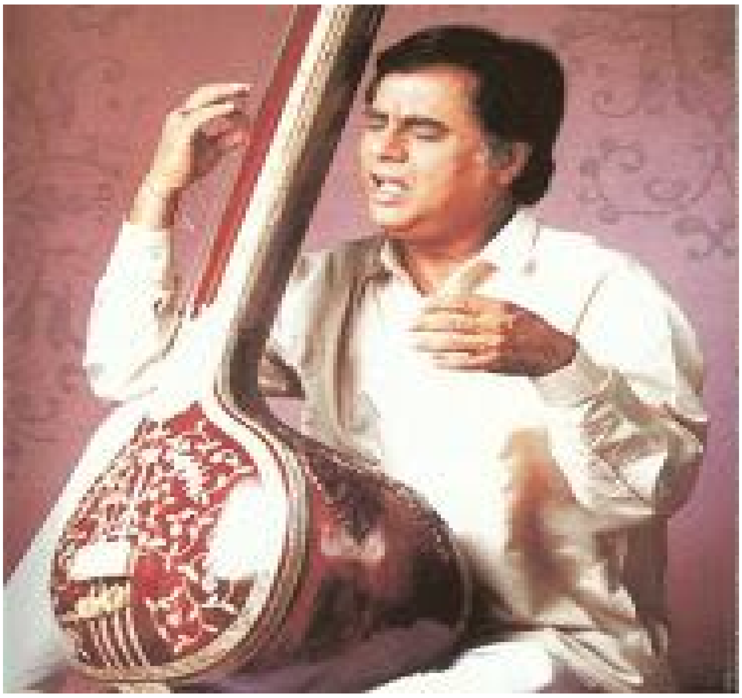

सारांश-
सुगम गायन मुख्यतः आल इंडिया रेडियो की ही देन है ।इसके अंतर्गत भजन एवं ग़ज़ल दोनों का समावेश होता है ।शास्त्रीय ,लोक ,सूफ़ी ,इत्यादि की भांति सुगम गायन शैली मे भी कबीर के अनेकों पदो, सखियों को गाया गया है।इस गायन शैली की सबसे बड़ी विशेषता है इसकी नवीनता । इसमे गायन का माधुर्य एवं रोचकता बनाए रखने के लिए पदों के साथ कुछ बदलाव भी कर दिया जाता है । यह शास्त्रीय गायन की तरह जटिल नहीं बल्कि मधुरता लिए हुए हृदयगम्य है । सुगम गायन शैली में कबीर के पदों को गाने वाले प्रमुख गायक-गायिकाओ में लता जी ,आशा भोसले,पुरुषोत्तम दास जलोटा ,जगजीत सिंह ,अनूप जलोटा ,हरिहरन ,इत्यादि प्रमुख हैं ।

शब्द कुंजी- संगीत, सुगम गायन शैली, कबीर, शास्त्रीय

Article Indexed in :
DOAJ Google Scholar DRJI
BASE EBSCO Open J-Gate

प्रस्तावना :

भारतीय संगीत में गायन की अनेक शैलिया प्रचलित है ,जिनमें ध्रुपद ,धमार ,ख़याल ,लोक ,सूफ़ी ,सुगम ,इत्यादि प्रमुख है ।सुगम संगीत को अंग्रेजी में लाइट म्यूजिक के नाम से भी जाना जाता है। सुगम संगीत मूलत: ऑल इंडिया रेडियो की देन है। अब हर रेडियो स्टेशन अपने नैमित्तिक कार्य में लाइट म्यूजिक यानि सुगम संगीत का प्रसारण अवश्य करता है और उसे एक अलग विधा के रूप में स्वीकृति देता है। सुगम गायन में भजन एवं ग़ज़ल दोनों का समावेश मुख्य रूप से होता है।

भारत में भजन गायन की एक समृद्ध परंपरा है। जिसके अंतर्गत सूर, कबीर, मीरा, तुलसी, रैदास, नानक, नामदेव इत्यादि के पदों को गाया गया है। कबीर के पदों को आज के परिवेश में सुगम गायन शैली में गानेवाले गायक-गायिकाओं में लता मंगेशकर, आशा भोंसले, पुरुषोत्तमदास जलोटा, अनूप जलोटा, जगजीत सिंह, हरिहरन, सुरेश वाडेकर इत्यादि प्रमुख हैं।

लता मंगेशकर

भारत रत्न लता मंगेशकर के मर्मस्पर्शी स्वर का बखान पिछली आधी शताब्दी से भी ज्यादा पूरे सम्मान के साथ होता है। इन्हें सुर साम्राज्ञी संगीत की देवी इत्यादि कहा जाता है। संगीत के बारे में वे कहती हैं कि : "मैं संगीत से ही जीवित हूँ, संगीत के पार कुछ भी देख नहीं पाती।"

पार्श्वगायन के अतिरिक्त इन्होंने उपशास्त्रीय तथा सुगम गायन भी किया है। भजनों में इन्होंने कबीर के साथ-साथ भगवद गीता ,ज्ञानेश्वरी, गुरूबानी, इत्यादि भी गाया है। इन्होंने कबीर के भजनों में ‘तोरी मोरी लगन लगायो रे फकिर वा तथा ‘झीनी-झीनी बीनी चदरिया इत्यादि को बड़े ही मनोभाव के साथ गाया है।

झीनी-झीनी बीनी चदरिया जैसे दार्शनिक तात्विक गीतो को भी लता जी ने बडी ही सरसता और मधुरता के साथ गाया है।

लता जी अपने गीतों में मीड, खटका, मुर्की इत्यादि का प्रयोग बड़ी ही सजगता से करती हैं, वे सही शब्द पर सटीक सुर लगाती हैं, जिससे उनमें कोई भी त्रुटि, दोष दिखाई नहीं देता। इस प्रकार इनकी गायकी और भी आकर्षक हो जाती है।

पुरुषोत्तम दास जलोटा

भजन गायकों में पुरुषोत्तम दास जलोटा का नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है। ये मशहूर भजन गायक अनूप जलोटा के पिता हैं इन्होंने कबीर के पदों को बड़ी ही सरलता एवं सजीवता के साथ गाया है। इनके द्वारा गाये गए कबीर भजनों में मूलत: ईश्वर की भक्ति के तत्व, संसार की निस्सारता, ईश्वर की व्यापकता, गुरू की महत्ता इत्यादि का स्वरूप मुख्य रूप से मिलता है। कबीर ने हमेशा पोंगा पंडितों का विरोध किया है। वे 'आखिन देखी' को 'कागज की लेखी' से श्रेष्ठ मानते हैं और उनसे कहते हैं कि तुम्हारा और मेरा मन एक कैसे हो सकता है :

"तेरा मेरा मनुवा कैसे एक होई रे

मैं कहता आँखिन की देखी, तू कहता कागज की लेखी
मैं कहता सुर झावन हारी, तू राज्यौ डर झाई रे।

x x x x x

सतगुरू धारा निर्मलबा है बामै काया धोई रे

कहब कबीरसुनो भाई साधो, तब ही वैसा होई रे"

(हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर पृष्ठ 247)

कबीर दास मानते हैं, कि ईश्वर घट-घट में विराजमान है, वह आत्मा के अंदर ही बसा है किंतु मोह के पास में इस प्रकार पड़ा है कि वह उसे देख नहीं पाता –

"कस्तूरी कुंडली बसे, मृग ढूंढ़े बनया ही
ऐसे घटि-घटि राम है, दुनिया देखा नाहि।"

(कबीर वाड़गय खंड-3 साखी पृष्ठ 317)

उसी प्रकार का एक पद पुरूषोत्तम दास जी गाते हैं, जिसमें यह कहा गया है कि पानी अर्थात ब्रह्म के बीच रहकर भी मछली यानी जीवात्मा प्यासी है, यह सुनकर हँसी आती है।

"पानी बिच मीन पियासी मोहे सुन-सुन आवे हँसी"

पुरूषोत्तम दास जी ने इस प्रकार के कबीर के अनेकों पदों को बड़े ही सहजता से गाया है। जिनमें भाव प्रधानता तो है ही किंतु कृत्रिमता लेशमात्र भी दिखाई नहीं देती है।

जगजीत सिंह

गजल एवं भजन गायकों में जगजीत सिंह जी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इनका इन दोनों ही विधाओ पर समान अधिकार है किंतु भजन गायन में इन्हें प्रसिद्धी प्रमुखता से मिली। इन्होंने कबीर सूर, तुलसी, मीरा, इत्यादि के पदों को अपना स्वर दिया। मखमली आवाज के जादूगर जगजीत जब भजन गाना प्रारंभ करते हैं तो मन स्थिर होकर उनकी ही ओर लग जाता है तथा भक्ति का श्रोत हृदय से फूट कर बहने लगता है ।

"तन्मय कर देने वाले संगीत का परिणाम सदा अश्रुपात ही नहीं होता। उस तन्मयता में कभी हमारी स्थिति उत्साह, विनोद, मादकता इत्यादि से पूर्ण भी होती है। श्रोताओं के हृदय में सदा स्थित परंतु सोए हुए से किसी भाव को पूर्णतया जगाकर उन्हें उसमें डुबा देना गीत का प्रयोजन है।"

(भारतीय संगीत के आ ऋषि आचार्य वृहस्पति एक अध्ययन पृ 111)

जगजीत सिंह का तन्मय करने वाला संगीत वास्तव में हृदय में भक्ति भाव को जगाता ही नहीं वरन उसे पुष्ट भी कर देता है। इन्होंने कबीर के कई भजनों को गाया है। इनमें प्रमुख भजन वो है जिनमें ईश्वर भक्ति, ब्रह्म के स्वरूप का विवेचन, मोह माया का त्याग, गुरू की महत्ता आदि का विवेचन है। इसी प्रकार कबीर का एक भजन जिसमें कहा गया है कि मनुष्य अपनी गति (अंत) नहीं जानता। उसके साथ क्या होगा, ये भी नहीं जानता ----

“अपने करम की गति मैं क्या जानूँ बाबा रे
नर मरे किहु काम न आवे, पशु मरे दासकाम सवारे
अपने करम की गति मैं क्या जानूँ बाबा रे

x x x x x x x x x x x

कहे कबीर तब ही नर जागे जम का दंड मुंड में है लागे
अपने करम की गति मैं क्या जानूं बाबा रे”

इस गीत को जगजीत सिंह बहुत ही मार्मिकता के साथ गाते हैं, भजन सुनने वाले सभी श्रोताओं को संसार की निस्सारता तथा क्षण भंगुरता का अहसास हो, जाता है।

जगजीत सिंह ने कबीर के पदों को गाते हुए उनमें रागों का भी प्रयोग किया है। वैसे तो भजन गायकी में रागों का स्वतंत्र प्रयोग होता है, उसमें कठोरता से पालन नहीं किया जाता। उनके द्वारा प्रयोग किए गए रागों में भैरवी, केदार , खमाज, देश, भैरव, यमन इत्यादि प्रमुख है। उन्होंने एक भजन 'बीत गए दिन भजन बीना रे' में भैरवी के स्वरूप को बड़े ही मनोहर ढंग से प्रस्तुत किया है।

अनूप जलोटा

अनूप जलोटा को भजन गायकी का पर्याय माना जाता है। इन्होंने भक्ति संगीत को एक नई दिशा प्रदान की है। इन्होंने, मीरा, सूर, तुलसी तथा कबीर के पदों को बड़े ही मनोभाव के साथ गाया है। इनमें भजन गायन का संस्कार इनके पिता पुरुषोत्तमदास जलोटा से पड़ा है। इन्होंने भजनों को नए अंदाज के साथ प्रस्तुत करने की कोशिश की। कबीर के अनेक भजनों को गाते समय उसमें नवीनता लाने हेतु संभवत: पदों के स्वरूप में कुछ हेर-फेर करते है। साथ ही उसमें रागों के साथ सरगम, आलाप इत्यादि का भी प्रयोग किया है।

इनके द्वारा गाया गया एक पद 'चदरिया झीनी-रे-झीनी' जो राग देश में निबद्ध वह संकलित ग्रंथावली से संभवत: कुछ भिन्न दिखाई देता है

मूल - "झीनी-झीनी बीनी चदरिया

काहै के ताना काहै, कै भानी, कौन तार से बीनी चदरिया,

इगला पिंगला ताना

भरनी सुखमय तार से बीती आठ के वल दल चरणा डालै

पांच तत्व गुन तीनी चदरिया

साई को सियत मास दस लागै ठीक-ठीक के बीनी चदरिया
सो चादर सुन नर मुनि ओढि ओढि के मैली कीनी चदरिया
दास कबीर जनत से ओढ़ी ज्यों के त्यों धर दीनी चदरिया"

अनूप जलोटा द्वारा गाया गया पद

"चदरिया झीनी रे झीनी
राम नाम रसकिनी चदरिया झीनी रे झीनी

अष्ट कमल का चरखा बनाया, पांच तत्व की बुनी चदरिया

नौ दस मास बुनन को लागे मुरख मैली कीन्ही
चदरिया झीनी रे झीनी

x x x x x x ध्रुव
प्रहलाद सुदामा ने पहनी, सुखदेव ने निर्मल किनी

दास कबीर ने ऐसी ओढ़ी ज्यों की त्यों धर दीनी

चदरिया झीनी-रे-झीनी"

अनूप जलोटा ने पदों के साथ कबीर की साखियों को भी नए ढंग से गाया है, उनके द्वारा गाए गए साखियों में गुरू महिमा, क्षण भंगुरता, ईश्वर भक्ति इत्यादि का रूप दिखाई देता है।

इस प्रकार हम देखते है की सुगम गायन शैली में भी कबीर गायन की एक समृद्ध परंपरा बनती दिखाई दे रही ।जो अपने में नवीनता लिये हुए है। न ही इसमे शास्त्रीय गायन की तरह बंधन है और न ही लोक गायन की तरह फक्कड़पन । यह अपनें में सजीवता लिये हुए है, जो कबीर को जनमानस तक पहुंचाने में सक्षम है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1कबीर विविध आयाम-,(संपादकप्रभाकर श्रोत्रिय (,भारतीय भाषा परिषद,कोलकाता-प्रथम संस्करण-2009

2कबीर तेरे रूप अनेक-,संपादक महावीर अग्रवाल,श्री प्रकाशन,दुर्ग,प्रथम संस्करण2000-

3कबीर साहब-,(संपादक विवेक दास (,कबीरवाणी,प्रकाशन केंद्र,वाराणसी,प्रथम संस्करण,1978

4कबीरग्रंथावली-,संपादक,श्यामसुंदर दास,नागरी प्रचारिणी सभा,काशी संवत 2045-

5-साखी (कबीर वाङ्ग्य खंड- 3) डॉ. जयदेव सिंह, डॉ. वासुदेव सिंहविश्वविद्यालय प्रकाशन ,वाराणसी,संस्कारण-4, 2004

6-कबीर,हजारी प्रसाद द्विवेदी,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली 2004

7-भारतीय संगीत का इतिहास,डॉ.शरद चंद श्रीधर प्रांजपे,

इंटरनेट सामाग्री

1-youtube.com

2-ragaa.com

3-songspk.com